(पहाड़ी कोठार से)

आबोतानी, मअजी यापम और किसिङ तामिङ की कहानी

(तागिन लोक-कथाएँ)

तारो सिन्दिक

(चयन- यापी बायोर)

आबोतानी और मअजी यापम की कहानी

ऐसा माना जाता है कि आबोतानी ने सृष्टि के सभी जीव-जंतुओं, कीड़े-मकोड़ों, पेड़-पौधों और देवी-देवताओं की प्रजातियों से वैवाहिक संबंध बनाया। उनकी कई पत्नियों में से एक का नाम था- मअजी यापम। मअजी यापम जंगलों की देवी थीं। जंगलों की सभी संपत्तियों पर उनका अधिकार था। इसलिए जब कभी आबोतानी जंगली पशुओं का शिकार करके घर लाते तो मअजी यापम को बहुत आघात पहुँचता और वे छुप-छुपकर रोया करती थीं। जंगली पशुओं के साथ उनका संबंध खून का था। इसलिए जब कभी जंगली पशुओं को आबोतानी मारते तो उन्हें भी बराबर दर्द होता था। उनकी इस स्थिति से अनजान आबोतानी ने कभी शिकार करना नहीं छोड़ा। उनको लगता था कि उनके इस शिकार-कौशल को देखकर मअजी यापम खुश होती होंगी, परंतु वस्तुस्थिति कुछ और ही थी। इसके अतिरिक्त एक और सच्चाई थी, जिससे आबोतानी अनजान थे। वह यह कि कभी-कभी जंगली पशु भी आबोतानी के घर आकर उनके पालतू पशुओं को खा जाता था। ऐसे में मअजी यापम बहुत खुश होती थीं, क्योंकि तब उनका भी पेट भरता था। लेकिन आबोतानी को पता चलता कि उनके पालतू पशुओं को जंगली पशु खा गया है, तो वह बहुत रोते थे। इस प्रकार दोनों के बीच यह आँख-मिचौली का खेल जारी था। हालाँकि आबोतानी अब भी सच्चाई से दूर थे।

बात इतने में समाप्त नहीं हुई थी। आबोतानी के इंसानी कृत्यों पर मअजी यापम का हस्तक्षेप जारी रहा। हुआ यों कि आबोतानी ने खेतों में काम करना आरंभ किया। वे खेतों में फसल उगाने के लिए अनावश्यक पौधों और पेड़ों को साफ करके जाते। अगली सुबह जब देखते तो उस जगह फिर से वही पौधा और पेड़ उग आता। वे फिर साफ करके जाते; अगली सुबह उन पेड़-पौधों को फिर वहीं पर यथावत पाते। आबोतानी को समझ में नहीं आया कि आखिर ऐसा हो क्यों रहा है। उन्होंने निश्चय किया कि वे इसका पता लगाकर ही रहेंगे। उस शाम वे खेतों से वापस घर नहीं लौटे, बल्कि खेतों के किनारे झाड़ियों की ओट में छिप गए। उन्होंने देखा कि कुछ देर बाद मअजी यापम खेत में आईं और उन्होंने जो कुछ भी किया, उसे देखकर आबोतानी के आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रही। वह हर कटे हुए पेड़-पौधे को छूकर कहतीं कि 'यह मेरा है', तो वह फिर से उग आता। इस तरह आबोतानी द्वारा काटे गए सभी अनावश्यक पेड़-पौधे पुनः जीवित हो उठते और कटा हुआ खेत फिर से जंगल में तब्दील हो जाता।

आबो ने गुस्से और आश्चर्य के मिश्रित भाव से झाड़ियों से अचानक निकलकर मअजी यापम को दबोच लिया। मअजी यापम ने स्वयं को आबोतानी के चंगुल से आजाद कराने की बहुत कोशिश की। दोनों में

मल्ल-युद्ध जैसा चलने लगा। मअजी को बाँधे रखने के लिए आबोतानी ने कई जंगली रस्सियों का प्रयोग किया, परंतु जैसे ही मअजी यापम कहतीं कि 'ये मेरा है' तो सारी रस्सियाँ अपने आप टूट जातीं। इस तरह दोनों का मल्लयुद्ध पहाड़ों में स्थित खेत से लेकर समतल भूमि तक आ पहुँचा। पहाड़ से लेकर समतल भूमि तक के इस मल्लयुद्ध में दस दिन बीत गए। अंत में आबोतानी को बड्ञ्यी ग्या नामक रस्सी मिली, जिससे बँधने पर आखिरकार मअजी यापम ने कहा कि 'हाँ, यह तुम्हारा है।'

अंततः इस तरह आबोतानी ने मअजी यापम को बाँधने में सफलता हासिल की। इस मल्लयुद्ध का परिणाम यह हुआ कि अब दोनों का एक साथ रहना असंभव हो गया। इसलिए यह तय किया गया कि दोनों को हमेशा के लिए अलग हो जाना चाहिए। दोनों की विधिवत विदाई के लिए दोरी चिजी को बुलाया गया। दोरी चिजी ने कहा कि आज के बाद तुम दोनों एक साथ नहीं रह सकते हो, इसलिए तुम दोनों के कार्य-क्षेत्र भी अलग हो जाएँगे और जंगल की संपत्ति का विभाजन हो जाएगा। दोरी चिजी ने फरमान सुनाया कि जंगलों का ऊबड़-खाबड़ और वीरान इलाका, जो अतिशय घना है तथा असामान्य बाँस, असामान्य बेंत, असामान्य पेड़ तथा असामान्य रस्सियाँ- सब मअजी-यापम के हिस्से में जाएँगे और वह सारा इलाका आबोतानी के नाम होगा, जहाँ इंसान अपना आशियाना बना सकें। आबोतानी के हिस्से में वे सारे पेड़-पौधे होंगे, जो दिखने में बिल्कुल सामान्य हों और जिन्हें उपयोग में भी लाया जा सके।

इस प्रकार आबोतानी और मअजी यापम का स्थायी बिछुड़न हो गया। आबोतानी इंसानों के गाँव बसाने लगे और मअजी यापम घने जंगलों में, ऊँचे पहाड़ों में विचरण करने चली गईं। तब से लेकर आज तक दोनों के बीच विभाजन-रेखा कायम है। आबोतानी और उनके वंशज, यानी हम मनुष्य जाति मअजी यापम के कार्यक्षेत्र में घुसपैठ नहीं करते। हम उनके जंगलों को बिना उनसे पूछे काटने की गुस्ताखी नहीं करते। जब कभी किसी विराट वृक्ष को काटना हो, या फसल उगाने हेतु जंगल साफ करना हो, तो पहले हम किसी धर्मगुरु के सहारे अनुष्ठान का आयोजन करते हैं और किन्हीं पशुओं की बलि के माध्यम से मअजी यापम से सौदा तय करते हैं कि वे हमारे इस कार्य में बाधा न डालें। यदि कोई बिना पूछे मअजी यापम की संपत्ति पर हाथ डाले तो वे उसे भयानक सजा देती हैं।

तागिन जनजाति में यह लोक-आस्था विकसित हुई कि जंगलों के भी अपने रक्षक होते हैं, जिसके साथ छेड़खानी अत्यंत हानिकारक हो सकती है। ऐसा कई बार देखा भी गया है कि किसी असामान्य पेड़, रस्सी, लकड़ी या बाँस को काटने के तुरंत बाद वह व्यक्ति या तो मर जाता है या फिर भयानक रोग का शिकार हो जाता है; जिसका निवारण कभी होता है, तो कभी नहीं होता है। केवल इतना ही नहीं, जंगलों में अतिरिक्त शिकार करना भी अच्छा नहीं माना जाता, क्योंकि लोग मानते हैं, इससे मअजी यापम नाराज हो सकती हैं और उन्हें दंड भी दे सकती हैं।

आबोतानी और किसिङ तामिङ की कहानी

किसिङ तामिङ आबोतानी की एक और पत्नी का नाम था, जो रिश्ते में मअजी यापम की बहन लगती थी। किसिङ तामिङ से विवाह करने से पहले आबोतानी और मअजी यापम के बीच बहुत अनबन चल रही

थी। हुआ यह था कि आबोतानी जब अपने मिथुनों की घेराबंदी के लिए बाड़े का निर्माण कर रहे थे तो मअजी यापम अदरक का रूप धारण करके आबोतानी के समक्ष प्रकट हुई। आबोतानी ने उसे सामान्य अदरक समझकर मुँह में डाला और चबाने का प्रयत्न किया। लेकिन उनके दाँतों से खुद को बचाते हुए वह सीधे आबोतानी के शरीर के अंदर समा गई। आबोतानी जब-जब अपने मिथुनों के पास जाते तो मअजी यापम बाहर आकर सारे मिथुनों को खा जाती थी। इस तरह एक-एक करके मअजी यापम आबोतानी के सारे मिथुनों को अपना आहार बना रही थी। अंत में आबोतानी ने सोचा कि यदि ऐसे ही चलता रहा तो अपने सारे मिथुनों से वह हाथ धो बैठेंगे। इसलिए उन्होंने तय किया कि उसकी बहन किसिङ तामिङ से विवाह करके उसे अपना रिश्तेदार बनाया जाए। इस प्रकार आबोतानी ने किसिङ तामिङ से विवाह कर लिया।

विवाह के पश्चात् किसिङ तामिङ की शारीरिक अवस्था बिगड़ती गई। उसका शरीर दिन-प्रति-दिन ढलता जा रहा था। आबोतानी रोज उसे पौष्टिक आहार खिलाते, पर उसकी शारीरिक अवस्था में कोई सुधार नहीं आ रहा था। एक दिन किसिङ तामिङ ने आबोतानी से कहा कि तुम्हारे इस भोजन से मैं कभी स्वस्थ नहीं हो सकती। मुझे मेरे मायके से लाए गए खाद्य-पदार्थ ही ठीक कर सकते हैं। इसलिए तुम मेरे मायके जाओ और वहाँ से मेरे लिए भोजन लेकर आओ। पत्नी के कहे अनुसार आबोतानी किसिङ तामिङ के घर गए, वहाँ उनके परिजनों से मिले और किसिङ तामिङ की शारीरिक अवस्था के विषय में विस्तार से बताया। मअजी यापम सहित सबने कहा कि किसिङ तामिङ के लिए विशेष भोजन की आवश्यकता है। उस विशेष भोजन के लिए उन्हें जंगल जाना था, शिकार के लिए। आबोतानी भी साथ चल दिए।

आबोतानी एक कोने में छिप गए- शिकार के लिए। थोड़ी देर बाद उन्होंने देखा कि एक इंसान उनके सामने से निकल गया। आबोतानी ने उसका कुछ नहीं किया और न ही उससे कुछ पूछा। वह निकल गया। थोड़ी देर बाद मअजी यापम और उसके सभी भाई-बंधु भी आ गए। सबने आबोतानी से पूछा कि उन्होंने किसी प्राणी को यहाँ से गुजरते हुए तो नहीं देखा। आबोतानी ने उत्तर दिया कि 'मैंने कुछ नहीं देखा। यहाँ से तो केवल एक आदमी गया है, अभी-अभी। तब मअजी ने कहा कि 'अरे! उसी को तो मारने के लिए हम उसका पीछा कर रहे हैं। तुमने उसे जाने क्यों दिया?' यह सुनकर आबोतानी के आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रही। उनके मन में शंका जगी, 'ये लोग इंसान का शिकार करते हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि ये लोग किसिङ तामिङ को इंसानी मांस खिलाने वाले हैं।' परंतु अपनी सारी शंकाओं और प्रश्नों को उन्होंने अपने मन के भीतर दबाकर रखा। मअजी अपने भाइयों सहित उस आदमी को पकड़ने के लिए तेजी से आगे निकल गई और आबोतानी को वहीं रुकने को कहा।

अगली सुबह आबोतानी के लौटने का वक्त आ गया। लौटने से पहले किसिङ तामिङ के परिजनों ने ताकु (एक स्थानीय वृक्ष, जिसके लंबे-पतले पत्तों से स्थानीय दरी बनाई जाती है) से बनी दो-तीन पोटलियाँ आबोतानी को सौंप दीं और कहा कि इन्हें किसिङ तामिङ के नासू अर्थात् धान्यागार में रख देना। आबोतानी ने वैसा ही किया, जैसा उन लोगों ने कहा। वह उन पोटलियों को लेकर अपने घर लौट आए और उन्हें धान्यागार में रख दिया। आबोतानी ने बहुत प्रयास किया- यह देखने के लिए कि उन पोटलियों के अंदर क्या है, परंतु वह उन्हें खोल नहीं पाए। किसिङ तामिङ प्रतिदिन अपने धान्यागार जाती और उस पोटली में से कुछ निकाल-

निकाल कर खाती। देखते-ही-देखते उसके स्वास्थ्य में एकदम से सुधार आने लगा और वह फिर से पहले जैसी तंदुरुस्त होने लगी। आबोतानी इस रहस्य को बिल्कुल भी नहीं समझ पाए। एक दिन वह धान्यागार की ओर गए। वहाँ जाकर उन्होंने देखा- उस पोटली को चूहों ने कुतर-कुतर कर उसमें सुराख बना दिया है। उसी सुराख में से एक चूहा इंसानी उँगली लेकर बाहर आया। उस उँगली को देखकर आबोतानी को समझने में देर नहीं लगी कि यह उसी आदमी की उँगली है, जिसे वह जंगल में शिकार करने के दौरान देख चुके हैं। आबोतानी ने यह भी समझ लिया कि उनकी पत्नी किसिङ तामिङ उसी इंसान का मांस खाकर फिर से सेहतमंद हो गई है। अब उन्हें चिंता सताने लगी कि क्या किया जाए। जिस स्त्री से उनका विवाह हुआ, वह तो इंसान का मांस खाती है। सत्य जानने के बावजूद वह अपने पत्नी के साथ रहने के लिए विवश थे।

आबोतानी ने मन बना लिया था कि किसी भी परिस्थिति में उन्हें अपनी पत्नी के साथ रहना है। लेकिन पिछले कुछ दिनों से किसिङ तामिङ के परिजनों की तरफ से लगातार आबोतानी के लिए बुलावा आ रहा था। आबोतानी को समझ में नहीं आ रहा था कि उन्हें क्यों बार-बार बुलाया जा रहा है? लेकिन किसिङ तामिङ समझ चुकी थी कि वह बुलावा वास्तव में उनके परिजनों द्वारा रची गई एक साजिश है, जिससे कि वे आबोतानी को मारकर अपना आहार बना सकें। ससुराल से आए न्योते को वह ठुकरा नहीं सकते थे, इसलिए आबोतानी जाने को तैयार हुए। जाने से पहले किसिङ तामिङ ने आबोतानी को समझाया कि मेरे भाई-बंधु तुम्हें जंगल में काम करने के लिए ले जाएँगे। वहाँ घर बनाने हेतु जब बड़े-बड़े पेड़ों की टहनियाँ इकट्ठी कर रहे होंगे, तब तुम्हें मारने का प्रयत्न किया जाएगा। वे जब ढलान के ऊपरी हिस्से में खड़े रहकर तुम्हारा नाम पुकारेंगे और टहनी को तुम्हारी ओर ढकेलेंगे तो तुम 'हाँ' कहकर उस टहनी को पकड़ लेना। दूसरी बार जब तुम्हारा नाम फिर से पुकारेंगे तो तुम 'हाँ' कहकर ढलान में बनी गुफा में छिप जाना, क्योंकि इस बार वे सारी टहनियों को एक साथ तुम्हारे ऊपर फेंककर तुम्हें मारने की कोशिश करेंगे।

पत्नी की बात मानकर आबोतानी ससुराल गए। वहाँ ठीक वैसा ही हुआ, जैसा किसिङ तामिङ ने आबोतानी को बताया था और आबोतानी ने भी वैसा ही किया, जैसा उन्हें समझाया गया था। आबो ने गुफा में घुसकर उनकी चाल को विफल कर दिया। सारी टहनियों को आबोतानी की ओर ढकेलने के बाद सबने समझ लिया कि आबोतानी अब नहीं रहे। वे सब ढलान से नीचे उतरे और टहनियों को उठा-उठाकर आबोतानी की लाश को तलाशने लगे। इतने में आबोतानी गुफा से बाहर आए और कहा, "मेरे प्रिय सालों, मैं तो यहाँ हूँ और जिंदा हूँ!" आबोतानी को जिंदा पाकर सबने समझ लिया कि किसिङ तामिङ ने ही आबोतानी को सारी बातें बताई होगी। अपनी बहन पर सभी को बहुत गुस्सा आया।

अगली बार फिर से आबोतानी के लिए लगातार बुलावा आने लगा। जीजा जी का कर्तव्य निभाने के लिए आबोतानी को फिर से जाना था। जाने से पहले किसिङ तामिङ ने फिर से आबोतानी को समझाया कि इस बार मेरे भाइयों की टोली तुम्हें खेत में काम कराने ले जाएगी। वहाँ खेतों में आग लगाने के बहाने तुम्हें जलाकर मारने का प्रयत्न किया जाएगा। (झूम खेती का दूसरा चरण होता है- कटे हुए पेड़-पौधों के सूख जाने के पश्चात् उन्हें जलाकर मिट्टी को धान बोने लायक उपजाऊ बनाना) तुम जब खेत के बीचो-बीच काम रहे होगे,

तब वे लोग निचले हिस्से में रहकर तुम्हारा नाम दो बार पुकारेंगे। तुम दूसरी बार 'हाँ' कहकर खेत के बीच एक बड़ा सा गड्ढा है, उसमें घुस जाना, ताकि मेरे भाइयों द्वारा लगाई गई आग से बच सको।

आबोतानी एक बार फिर ससुराल आ पहुँचे। किसिङ तामिङ के परिजनों के साथ वे उनके खेत में गए। वहाँ सब कुछ ठीक वैसा ही हुआ, जैसा किसिङ तामिङ ने आबोतानी को बताया था। इस बार भी आबोतानी के ससुराल वालों ने सोच लिया कि आग की इतनी प्रचंड लपटों से आबोतानी का बचना नामुमकिन है। अतः वे सब मिलकर राख के ढेर में आबोतानी की लाश तलाशने लगे। इतने में गड्ढे में छिपे आबोतानी बाहर आए और कहा कि 'मैं तो अब भी जिंदा हूँ।' सब लोग फिर से अपनी बहन को कोसने लगे, जिसके कारण उनके द्वारा रची गई साजिश मिट्टी में मिल गई। इस बार भी आबोतानी उनके हाथों से बचकर निकल गए, सिर्फ किसिङ तामिङ के कारण।

आबोतानी के ससुराल वालों ने भी हार नहीं मानी। उन लोगों ने आबोतानी को फिर न्योता दिया। हमेशा की तरह किसिङ तामिङ ने आबोतानी को बताया कि इस बार उन्होंने एक प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए तुम्हें बुलाया है, जिसका नाम है- 'बोबो चानम'। बोबो चानम झूला झूलने की एक प्रक्रिया है, जिसके तहत एक रस्सी में झूलते हुए बड़े-बड़े पेड़ों के ऊपर चढ़ा जाता है। तुम उस प्रतियोगिता में जरूर हिस्सा लेना, लेकिन एक बात का ध्यान रखना। मेरे भाइयों के झूला झूलते हुए चार-पाँच चरण ऊपर चढ़ने के बाद तुम केवल एक ही चरण चढ़ना, नहीं तो तुम्हारे ऊपर चढ़ने के बाद वे लोग तुम्हारी रस्सी काट देंगे और तुम गिरकर मर जाओगे। आबोतानी सारी बातें सुनने के बाद ससुराल की ओर चल पड़े। वहाँ पहुँचकर उन्होंने उस प्रतियोगिता में भाग लिया; लेकिन उनको अपनी शारीरिक शक्ति पर इतना घमंड हो गया कि उन्होंने किसिङ तामिङ की बातों को भुला दिया। अपने घमंड में वे इस कदर अंधे हो गए कि किसिङ तामिङ के भाइयों द्वारा केवल एक चरण चढ़ने पर वह पाँच-दस चरण चढ़ गए। बहुत ही कम समय में वह जमीन से बहुत ऊपर आ गए। इधर किसिंग तामिङ के भाइयों को अवसर मिल गया- आबोतानी को मारने का। पहले से ही वृक्ष के ऊपर तैनात कुछ भाइयों ने टहनी से बँधी एक रस्सी को काट दिया, जिस पर आबोतानी लटके हुए थे। एक रस्सी के कट जाने से दूसरे सिरे के सहारे आबोतानी का शरीर हवा में दूर-दूर तक झूलने लगा। हवा में झूलते हुए आबोतानी का अपने शरीर पर कोई नियंत्रण नहीं रहा। इस मौके का फायदा उठाते हुए किसिङ तामिङ के भाइयों ने आबोतानी के यिङ्गो पी और जारगो पी अर्थात् दिव्य दृष्टि और दिव्य वाणी को छीन लिया। इन दोनों के कारण आबोतानी के पास असाधारण शक्ति थी, जो आम इंसान के पास नहीं होती।

दोनों शक्तियों के छिन जाने के कारण आबोतानी हवा में और देर झूल न सके और गहरी खाई में गिर गए। जब उनका अर्धमृत शरीर नदी की धार में बह रहा था तो आई आगम, गुङचि रियाचि आदि देवताओं ने उन्हें बचा लिया। ऐसी मान्यता है कि ये दोनों देवता मनुष्य की आत्मा के रक्षक हैं। इन दोनों के द्वारा आबोतानी को फिर से जीवनदान प्राप्त हुआ, परंतु वह अब एक साधारण इंसान बनकर रह गए थे। अपनी खोई हुई दिव्य दृष्टि और दिव्य वाणी के विषय में सलाह माँगने के लिए आबोतानी दोरी चिजि के पास गए। दोरी चिजि ने कहा कि तुम जिन शक्तियों से वंचित हो चुके हो, उन्हें दोबारा प्राप्त करना तो नामुमकिन है। आज के बाद तुम मनुष्य जाति की इसी साधारण शक्ति के साथ जिओगे और मरोगे। हाँ, एक विशेष व्यक्ति के पास ही यह शक्ति रहेगी,

जो तुम जैसे साधारण मनुष्यों को मुसीबत के पलों में सहायता प्रदान करेगा। उस विशेष शक्ति-धारक व्यक्ति के सहायक होंगे- मुर्गी के अंडे और चूजों की अँतड़ियाँ।

उसी दिन से तागिन समाज में मुर्गी के अंडे और चूजों की अँतड़ियाँ के द्वारा भविष्यवाणी करने की विधि आरंभ हुई। इस विधि को संपन्न करने वाला व्यक्ति 'विशेष शक्तिधारक' होता है, जिसे तागिन में ञ्युबु और ञ्येक्योक कहा जाता है; जिसका हिंदी अर्थ है- 'धर्मगुरु'। ञ्युबु और ञ्येक्योक ये दोनों ऐसे व्यक्ति हैं, जिनके पास दिव्य दृष्टि और दिव्य वाणी है। इनमें से ञ्युबु का दर्जा ञ्येक्योक से थोड़ा ऊपर होता है, क्योंकि वह अपनी दिव्य शक्ति से सभी प्रकार के धार्मिक कर्मकांडों को संपन्न कराता है। भूत-प्रेत की चपेट से आजाद कराने, होनी-अनहोनी को पहले से देखने, किसी रोग का निवारण करने तथा सभी प्रकार के अनुष्ठानों को संपन्न कराने में इन्हीं धर्मगुरुओं का हाथ होता है। अतः ये विशेष शक्ति के मालिक होने के कारण साधारण मनुष्य के हितैषी बन गए और साधारण मनुष्य उन पर आश्रित होने लगे। तागिन समाज मानता है कि यदि आबोतानी ने अपनी पत्नी की बात मानी होती, तो आज हर मनुष्य उतना ही शक्तिशाली होता, जितने आज के धर्मगुरु हैं। उनके चंचल मन ने मनुष्य जाति को एक विशेष प्रकार की शक्ति से हमेशा के लिए वंचित कर दिया।

*(**लेखकीय परिचय :** अरुणाचल प्रदेश के सुपरिचित युवा कवि और कहानीकार तारो सिन्दिक देरा नातुङ शासकीय महाविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। आपको साहित्य अकादमी का 'युवा सम्मान' मिला है और आपकी प्रकाशित कृतियाँ हैं- 'अक्षरों की विनती', 'फिर आना तुम', 'तागिन लोक-साहित्य' आदि।*

मोबा: 9402963147, ई-मेल : tarosindik@gmail.com)